

रविवार 22 दिसंबर, 2024

विषय — क्या ब्रह्मांड, मनुष्य सहित, परमाणु बल द्वारा विकसित है?

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 119: 165

"तेरी व्यवस्था से प्रीति रखने वालों को बड़ी शान्ति होती है; और उन को कुछ ठोकर नहीं लगती।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 46: 1-3, 5, 8-10

- 1 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक।
- 2 इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं;
- 3 चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए, और पहाड़ उसकी बाढ़ से कांप उठें॥
- 5 परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं; पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है।
- 8 आओ, यहोवा के महाकर्म देखो, कि उसने पृथ्वी पर कैसा कैसा उजाड़ किया है।
- 9 वह पृथ्वी की छोर तक लड़ाइयों को मिटाता है; वह धनुष को तोड़ता, और भाले को दो टुकड़े कर डालता है, और रथों को आग में झोंक देता है!
- 10 चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूं। मैं जातियों में महान हूं, मैं पृथ्वी भर में महान हूं!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 2: 1-4, 11

- 1 आमोस के पुत्र यशायाह का वचन, जो उसने यहूदा और यरूशलेम के विषय में दर्शन में पाया॥
- 2 अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लागे धारा की नाई उसकी ओर चलेंगे।
- 3 और बहुत देशों के लोग आएंगे, और आपस में कहेंगे: आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हम को अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा।

- 4 वह जाति जाति का न्याय करेगा, और देश देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा; और वे अपनी तलवारें पीट कर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे॥
- 11 क्योंकि आदमियों की घमण्ड भरी आंखें नीची की जाएंगी और मनुष्यों का घमण्ड दूर किया जाएगा; और उस दिन केवल यहोवा ही ऊंचे पर विराजमान रहेगा॥

2. 2 इतिहास 20: 1, 3-6, 13, 14 (से 1st), 15 (कहा), 17, 18, 20-22, 27-30

- 1 इसके बाद मोआवियों और अम्मोनियों ने और उनके साथ कई मूनियों ने युद्ध करने के लिये यहोशापात पर चढ़ाई की।
- 3 तब यहोशापात डर गया और यहोवा की खोज में लग गया, और पूरे यहूदा में उपवास का प्रचार करवाया।
- 4 सो यहूदी यहोवा से सहायता मांगने के लिये इकट्ठे हुए, वरन वे यहूदा के सब नगरों से यहोवा से भेंट करने को आए।
- 5 तब यहोशापात यहोवा के भवन में नये आंगन के साम्हने यहूदियों और यरूशलेमियों की मण्डली में खड़ा हो कर
- 6 यह कहने लगा, कि हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा! क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नहीं करता? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा साम्हना कोई नहीं कर सकता?
- 13 और सब यहूदी अपने अपने बाल-बच्चों, स्त्रियों और पुत्रों समेत यहोवा के सम्मुख खड़े रहे।
- 14 तब आसाप के वंश में से यहजीएल नाम एक लेवीय जो जकर्याह का पुत्र और बनायाह का पोता और मत्तन्याह के पुत्र यीएल का परपोता था, उस में मण्डली के बीच यहोवा का आत्मा समाया।
- 15 और वह कहने लगा, हे सब यहूदियो, हे यरूशलेम के रहनेवालो, हे राजा यहोशापात, तुम सब ध्यान दो; यहोवा तुम से यों कहता है, तुम इस बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो; क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं, परमेश्वर का है।
- 17 इस लड़ाई में तुम्हें लड़ना न होगा; हे यहूदा, और हे यरूशलेम, ठहरे रहना, और खड़े रह कर यहोवा की ओर से अपना बचाव देखना। मत डरो, और तुम्हारा मन कच्चा न हो; कल उनका साम्हना करने को चलना और यहोवा तुम्हारे साथ रहेगा।
- 18 तब यहोशापात भूमि की ओर मुंह कर के झुका और सब यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों ने यहोवा के साम्हने गिर के यहोवा को दण्डवत किया।
- 20 बिहान को वे सबेरे उठ कर तकोआ के जंगल की ओर निकल गए; और चलते समय यहोशापात ने खड़े हो कर कहा, हे यहूदियो, हे यरूशलेम के निवासियो, मेरी सुनो, अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो, तब तुम स्थिर रहोगे; उसके नबियों की प्रतीत करो, तब तुम कृतार्थ हो जाओगे।
- 21 तब उसने प्रजा के साथ सम्मति कर के कितनों को ठहराया, जो कि पवित्रता से शोभायमान हो कर हथियारबन्दों के आगे आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएं, और यह कहते हुए उसकी स्तुति करें, कि यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।

- 22 जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे, घातकों को बैठा दिया और वे मारे गए।
- 27 तब वे, अर्थात् यहूदा और यरूशलेम नगर के सब पुरुष और उनके आगे आगे यहोशापात, आनन्द के साथ यरूशलेम लौटे क्योंकि यहोवा ने उन्हें शत्रुओं पर आनन्दित किया था।
- 28 सो वे सारंगियां, वीणाएं और तुरहियां बजाते हुए यरूशलेम में यहोवा के भवन को आए।
- 29 और जब देश देश के सब राज्यों के लोगों ने सुना कि इस्राएल के शत्रुओं से यहोवा लड़ा, तब उनके मन में परमेश्वर का डर समा गया।
- 30 और यहोशापात के राज्य को चैन मिला, क्योंकि उसके परमेश्वर ने उसको चारों ओर से विश्राम दिया।

3. अय्यूब 5: 8, 9, 12, 13, 19-24 (से)

- 8 परन्तु मैं तो ईश्वर ही को खोजता रहूंगा और अपना मुकद्दमा परमेश्वर पर छोड़ दूंगा।
- 9 वह तो ऐसे बड़े काम करता है जिनकी थाह नहीं लगती, और इतने आश्चर्यकर्म करता है, जो गिने नहीं जाते।
- 12 वह तो धूर्त लोगों की कल्पनाएं व्यर्थ कर देता है, और उनके हाथों से कुछ भी बन नहीं पड़ता।
- 13 वह बुद्धिमानों को उनकी धूर्तता ही में फंसाता है; और कुटिल लोगों की युक्ति दूर की जाती है।
- 19 वह तुझे छः विपत्तियों से छुड़ाएगा; वरन सात से भी तेरी कुछ हानि न होने पाएगी।
- 20 अकाल में वह तुझे मृत्यु से, और युद्ध में तलवार की धार से बचा लेगा।
- 21 तू वचनरूपी कोड़े से बचा रहेगा और जब विनाश आए, तब भी तुझे भय न होगा।
- 22 तू उजाड़ और अकाल के दिनों में हंसमुख रहेगा, और तुझे बनैले जन्तुओं से डर न लगेगा।
- 23 वरन मैदान के पत्थर भी तुझ से वाचा बान्धे रहेंगे, और वनपशु तुझ से मेल रखेंगे।
- 24 और तुझे निश्चय होगा, कि तेरा डेरा कुशल से है।

4. 1 तीमथियुस 2: 1-4

- 1 अब मैं सब से पहिले यह उपदेश देता हूं, कि बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिये किए जाएं।
- 2 राजाओं और सब ऊंचे पद वालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं।
- 3 यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है।
- 4 वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली भांति पहिचान लें।

5. यशायाह 11: 9 (क्योंकि)

- 9 ...क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 76: 6-8 (से:)

जब अस्तित्व को समझा जाता है, तो जीवन को न तो भौतिक और न ही सीमित, बल्कि अनंत के रूप में पहचाना जाएगा, - भगवान के रूप में, सार्वभौमिक अच्छा।

2. 255: 1 (शाश्वत)-6

शाश्वत सत्य ब्रह्मांड को बदल रहा है। जैसे-जैसे नश्वर अपने मानसिक कपड़े उतारते हैं, विचार अभिव्यक्ति में फैलता है। "उजियाला हो", सत्य और प्रेम की सतत मांग है, अराजकता को क्रम में और कलह को क्षेत्रों के संगीत में बदलना।

3. 29: 5-15

भगवान मनुष्य सहित ब्रह्मांड का निर्माण और संचालन करता है। ब्रह्मांड आध्यात्मिक विचारों से भरा है, जिसे वह विकसित करता है, और वे मन के आज्ञाकारी हैं जो उन्हें बनाता है। नश्वर मन आध्यात्मिक को भौतिक में बदल देगा, और फिर इस त्रुटि की नश्वरता से बचने के लिए मनुष्य के मूल स्व को पुनर्प्राप्त करेगा। ईश्वर की स्वयं की छवि में बनाए गए नश्वर अमर की तरह नहीं हैं; लेकिन अनंत आत्मा सभी होने के नाते, नश्वर चेतना वैज्ञानिक तथ्य के लिए अंतिम पैदावार होगी और गायब हो जाएगी, और सही, और हमेशा के लिए होने का वास्तविक अर्थ प्रकट होगा।

4. 209: 5-8, 10-13, 16-30

मन, अपने सभी स्वरूपों पर सर्वोच्च और उन सभी पर शासन करने वाला, विचारों की अपनी प्रणाली, अपने सभी विशाल निर्माण का जीवन और प्रकाश का केंद्रीय सूर्य है; और मनुष्य दिव्य मन के लिए सहायक है। भौतिक और नश्वर शरीर या मन मनुष्य नहीं है।

मन के बिना दुनिया ढह जाएगी, बिना बुद्धि के जो अपनी पकड़ में हवाओं को रखता है। न तो दर्शन और न ही संशयवाद विज्ञान की प्रगति में बाधा डाल सकता है जो मन की सर्वोच्चता को प्रकट करता है।

पृथ्वी की रचना करने वाले यौगिक खनिज या एकत्रित पदार्थ, जो संबंध घटक सामग्री एक दूसरे के साथ रखते हैं, आकाशीय पिंडों की परिमाण, दूरी और क्रांतियाँ, कोई वास्तविक महत्व नहीं हैं, जब हमें याद आता है कि उन सभी को आध्यात्मिक तथ्य को मनुष्य और ब्रह्मांड के अनुवाद द्वारा आत्मा में स्थान देना चाहिए। इसके अनुपात में, मनुष्य और ब्रह्माण्ड सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत पाए जाएंगे।

भौतिक पदार्थों या सांसारिक संरचनाओं, खगोलीय गणनाओं, और सट्टा सिद्धांतों के सभी विरोधाभास, जो कि भौतिक कानून या जीवन और बुद्धि के निवासी की परिकल्पना के आधार पर, अंततः गायब हो जाएंगे, आत्मा के अनंत कलन में निगल जाते हैं।

5. 293: 13-16, 21-31

तथाकथित गैसों और बल, दिव्य मन की आध्यात्मिक शक्तियों के प्रतिरूप हैं, जिनकी सामर्थ्य सत्य है, जिनका आकर्षण प्रेम है, जिनका आसंजन और सामंजस्य जीवन है, होने के शाश्वत तथ्यों को नष्ट कर देता है।

भूकंप, हवा, लहर, बिजली, अग्नि, सबसे अच्छी गति में व्यक्त - नश्वर मन का कोई वाष्पीभूत रोष नहीं है और यह तथाकथित मन स्व-नष्ट है। बुराई की अभिव्यक्ति, जो ईश्वरीय न्याय का प्रतिकार करती है, शास्त्रों में कहा गया है, "प्रभु का क्रोध।" वास्तव में, वे त्रुटि या पदार्थ के आत्म-विनाश को दर्शाते हैं और पदार्थ के विपरीत, आत्मा की ताकत और स्थायित्व को इंगित करते हैं। क्रिश्चियन साइंस सत्य और उसके वर्चस्व, सार्वभौमिक सद्भाव, ईश्वर की पवित्रता, अच्छाई और बुराई की बुराई को प्रकाश में लाता है।

6. 469: 25-5

हम सर्वशक्तिमानता के उच्च संकेत को खो देते हैं, जब यह स्वीकार करने के बाद कि ईश्वर, या अच्छा, सर्वव्यापी है और सर्व-शक्ति है, हम अभी भी मानते हैं कि एक और शक्ति है, जिसका नाम बुराई है। यह धारणा कि ईश्वरीय धर्मशास्त्र के लिए एक से अधिक मन उतना ही खतरनाक है जितना कि प्राचीन पौराणिक कथाएं और मूर्तिपूजक मूर्तिपूजा। एक पिता, यहां तक कि भगवान के साथ, मनुष्य का पूरा परिवार भाइयों होगा; और एक मन और उस ईश्वर, या भलाई के साथ, मनुष्य का भाईचारा प्रेम और सत्य से मिलकर बना होगा, और इसमें सिद्धांत और आध्यात्मिक शक्ति की एकता होगी जो दिव्य विज्ञान का गठन करती है।

7. 276: 1-9, 12-16

एक ईश्वर, एक मन, उस शक्ति को प्रकट करता है जो बीमारों को चंगा करती है, और पवित्रशास्त्र की इन बातों को पूरा करती है, "मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूं," तथा "मुझे छुड़ौती मिली है।" जब दिव्य उपदेशों को समझा जाता है, तो वे फेलोशिप की नींव को उजागर करते हैं, जिसमें एक मन दूसरे के साथ युद्ध में नहीं है, लेकिन सभी के पास एक आत्मा, भगवान, एक बुद्धिमान स्रोत है, जो कि इंजील कमांड के अनुसार है: "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।"

यह अहसास कि सभी धर्म असत्य हैं, वस्तुओं और विचारों को अपने वास्तविक प्रकाश में मानवीय दृष्टिकोण में लाता है, और उन्हें सुंदर और अमर के रूप में प्रस्तुत करता है। मनुष्य में सद्भाव उतना ही वास्तविक और अमर है जितना संगीत में। त्याग असत्य और नश्वर है।

8. 225: 14-22

हमारे देश का इतिहास, सभी इतिहास की तरह, मन की शक्ति को दर्शाता है और मानव शक्ति को उसके सही सोच के अवतार के अनुपात में दिखाता है। कुछ अमर वाक्य, ईश्वरीय न्याय की सर्वशक्तिमत्ता की सांस लेते हुए, निरंकुश बेड़ियों को तोड़ने और चाबुक के खंभे और गुलाम बाजार को खत्म करने में सक्षम हैं; पर अत्याचार न तो लहू में उतरा और न तोप के मुंह से आजादी की सांस निकली। प्रेम मुक्तिदाता है।

9. 226: 7 (यह)-17

... इस नए धर्मयुद्ध के हेराल्ड की आवाज़ ने सार्वभौमिक स्वतंत्रता के लिए आवाज़ उठाई, जो मनुष्य के अधिकारों को परमेश्वर के पुत्र के रूप में पूर्ण रूप से स्वीकार करने की माँग कर रहा था। पाप, बीमारी, और मृत्यु के भ्रूण मानव मन से त्रस्त हो जाते हैं और इसकी स्वतंत्रता को मानवीय युद्ध के माध्यम से नहीं, संगीन और रक्त से नहीं, बल्कि मसीह के दिव्य विज्ञान के माध्यम से जीता जाना चाहिए।

भगवान ने मानव अधिकारों का एक उच्च मंच बनाया है, और उन्होंने इसे दिव्य दावों पर बनाया है। इन दावों को कोड या पंथ के माध्यम से नहीं किया जाता है, लेकिन "पृथ्वी पर शांति, पुरुषों के प्रति सद्भाव" के प्रदर्शन में।

10. 576: 21-25

ईश्वर का यह राज्य "आपके भीतर है," - यहाँ मनुष्य की चेतना की पहुंच के भीतर है, और आध्यात्मिक विचार इसे प्रकट करता है। दैवीय विज्ञान में, मनुष्य ईश्वर के बारे में अपनी समझ के अनुपात में सचेत रूप से सद्भाव की यह पहचान रखता है।

11. 585: 16 (यूफ्रेट्स)-19

यूफ्रेट्स (नदी)। ब्रह्माण्ड और मनुष्य के बीच का दिव्य विज्ञान; ईश्वर का सच्चा विचार; एक प्रकार की महिमा जो आने वाली है; भौतिकी की जगह लेने वाले तत्वमीमांसा; धार्मिकता का शासन।

12. 502: 28-5

ब्रह्मांड ईश्वर को दर्शाता है। लेकिन एक रचनाकार और एक रचना है। इस रचना में आध्यात्मिक विचारों और उनकी पहचानों का खुलासा होता है, जो अनंत मन में समाहित हैं और हमेशा के लिए परिलक्षित होते हैं। ये विचार अनंत से लेकर अनंत तक हैं, और उच्चतम विचार ईश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं।

13. 503: 12-15

ईश्वरीय विज्ञान, ईश्वर का शब्द, त्रुटि पर अंधेरे के लिए कहता है, "ईश्वर सब में है," और हमेशा मौजूद प्रेम का प्रकाश ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6